ऋषि दयानन्द के द्वारा संग्रहीत हस्तलिखित तथा मुद्रित पुस्तक

जो उनके निधन के समय विद्यमान थीं

ऋषि दयानन्द के निर्वाण के समय उनके पास किन-किन पुस्तकों का संग्रह था और वह कहां-कहां रक्खी हुई थीं, इसका एक लेखा श्रीमती परोपकारिणी सभा के तात्कालिक उपमन्त्री श्री पं० मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या ने तैयार कराकर सन् १८८५ के सभा के अधिवेशन में **आवेदन-पत्र** के रूप में उपस्थित किया था। वह सं० १९४२ सन् १८८५ में वैदिक यन्त्रालय में छपकर प्रकाशित हुआ था। उसकी हमने १९४४ में प्रतिलिपि की थी। उसके अनुसार हम ऋषि दयानन्द के द्वारा छोड़ी गई पुस्तकों की सूची नीचे दे रहे हैं।

आवेदन पत्र के मुख्य पृष्ठ पर निम्न लेख है--

वार्षिक आवेदन

पण्डित श्री मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या
उपमन्त्री श्रीमती परोपकारिणी सभा निवेदित
श्रीमद्दयानन्दस्वामीकृत स्वीकारपत्र संबन्धिनी
श्रीमती परोपकारिणी सभा कार्यालय उदयपुर
ता० ६ दिसम्बर सन् १८८५ ई०

इस आवेदन पत्र के पृष्ठ २ पर निम्न लेख छपा है—

(१) पुस्तकों की एक फैरिस्त इसके साथ पेश करता हूं कि जिस पर (क) चिह्न है, यह सब पुस्तकें मेरे पास उदयपुर में धरी हैं और इसी के साथ दूसरी पुस्तकों की एक फैरिस्त (ख) चिह्न की जो मुंशी समर्थदान जी ने मेरे पास भेजी है, पेश करता हूं, उसमें लिखी सब पुस्तकें वैदिक यन्त्रालय प्रयाग में हैं।

(क) पुस्तकों की फैरिस्त जो उदयपुर में उपस्थित हैं ⚜

सं०	नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के अनुसार	वृत्तान्त
१	वेष्टन १ ऋग्वेद—	ऋग्वेद संहिता मूल जिल्द१ छपी.	१		प्रयाग भेजे गये

⚜ यह फैरिस्त आवेदन पत्र के पृष्ठ ७–१६ तक छपी है। ऐसी ही एक पुस्तक सूची परोपकारिणी सभा की सन् १८९१-९२-९३ के सम्मिलित 'वार्षिक वृत्तान्त' के अन्त में 'नकशा नंबर' १७ के अन्तर्गत 'पुस्तकालय' शीर्षक के नीचे पृष्ठ ५-१२ तक छपी है इस सूची में उत्तरकाल में संगृहीत पुस्तकों का भी निर्देश है।

सं०	नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के अनुसार	वृत्तान्त
२	विषयक पुस्तकानि	ऋग्वेद संहिता पदपाठ जिल्द १ छपी	१		प्रयाग भेजे गये तथा
३		ऋग्वेद सभाष्य जिल्द २ छपी भाग ३ और ४ था २	२		,,
४		वेदार्थयत्न पुस्तक १ छपी अंक १☼	१		,,
५	वेष्टन २ **यजुर्वेद–**	संहिता मूल १ छपी	१		,,
६	**विषयक पुस्तकानि**	यजुर्वेद संहिता पदपाठ पुस्तक १ लिखी	१		,,
७		यजुर्वेद संहिता सभाष्य पुस्तक १ छपी	१		,,
८		यजुर्वेद अनुक्रमणिका पुस्तक १ लिखी	१		,,
९	वेष्टन ३ **सामवेद– विषयक पुस्तकानि**	सामवेद संहिता मूल पुस्तक १ छपी	१		,,
१०		,, ,, ,, ,, लिखी हुई	१		,,
११		,, ,, ,, पदपाठ लिखित	१		,,
१२	वेष्टन ४ **अथर्ववेद– विषयक पुस्तकानि**	अथर्ववेद संहिता मूल पुस्तक २ छपी	२		,,
१३		† ,, ,, ,, पदपाठ आठवें काण्ड तक लिखित	१		
१४		† अथर्ववेद की अनुक्रमणिका पुस्तक १ लिखित		१	,,
१५		† अथर्ववेद संहिता मूल पुस्तक १ प्राचीन लिखित सं० १९४१ की पण्डित मोहनलाल जी विष्णुलाल जी पण्ड्या को भेंट करी हुई		१	,,
१६		† अथर्ववेद संहिता मूल पुस्तक १ प्राचीन १३ काण्ड			

☼ अगली दूसरी सूची में '७० अंक' लिखे हैं।

† राथ और ह्विटनी ने शौनकीय अथर्वसंहिता का सम्पादन सन् १८५६ (सं० १९१३) में किया था। ऋ० द० ने अपने ग्रन्थों में अथर्ववेद के पाठ इसी संस्करण के अनुसार दिये हैं। अथर्ववेद का भाष्य करने के लिये उन्होंने सन् १८८२ के उत्तरार्ध में बम्बई आर्यसमाज के मन्त्री श्री सेवकलाल कृष्णदास को अथर्ववेद की टीका, ऋषि, छन्द और मूल ग्रन्थ की हस्तलिखित पुस्तक ढूंढने के लिये लिखा था। इसका निर्देश सेवकलाल कृष्णदास

सं० नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के क्षनुसार	वृत्तान्त
	से १७ काण्ड तक सं० १८२२ **की लिखित** पण्डित मोहनलाल जी विष्णुलाल जी पण्डचा को भेंट करी हुई		१	,,
१७	† अथर्ववेद संहिता मूल पुस्तक १ प्रथम काण्ड से ६ काण्ड के २७ सूक्त के पहिले मन्त्र तक पण्डित मोहनलाल जी विष्णुलाल जी पण्डचा को भेंट करी हुई		१	,,
१८	† अथर्ववेद संहिता मूल ११ वें काण्ड से १९ तक **प्राचीन** पण्डित मोहनलाल जी विष्णु जी पण्डचा को भेंट करी हुई		१	,,
१९	† अथर्ववेद संहिता मूल पदपाठ १ दूसरे काण्ड के पहिले सूक्त के चौथे मन्त्र से चौथे काण्ड के पन्दरहवें सूक्त के दूसरे मन्त्र तक **प्राचीन** पण्डित मोहनलाल जी विष्णुलाल जी पण्डचा को भेंट करी हुई।		१	,,
२० वेष्टन ५ **ब्राह्मण–**	शतपथ ब्राह्मण १ छपी		१	प्रयाग भेजे
२१ **पुस्तकानि**	ऐतरेय ब्राह्मण १ छपी		१	,,
२२	आर्षेय ब्राह्मण १ छपी		१	,,
२३	तथा तथा १ **लिखित**		१	,,
२४	संहितोपनिषद् ब्राह्मण १ छपी		१	
२५	वंशब्राह्मण १ छपी		१	,,

के २० जनवरी सन् १८८३ के पत्र में मिलता है। (देखो श्री म० मुंशीराम सं० पत्रव्यव० पृष्ठ २६९, २७०)। इसके लिये सेवकलाल कृष्णदास ने प्रयत्न भी किया था। अतः सम्भव है, अथर्ववेद के उक्त हस्तलिखित ग्रन्थ सेवकलाल कृष्णदास के सहयोग से श्री स्वामी जी ने प्राप्त किये होंगे जैनियों के भी बहुत से हस्तलिखित ग्रन्थ सेवकलाल कृष्णदास ने ही संग्रह करके ऋ० द० को भेजे थे। अथर्ववेद के इन हस्तलेखों में से एक भी हस्तलेख श्रीमती परोपकारिणी सभा के संग्रह में विद्यमान नहीं है। आवेदन पत्र में इन हस्तलेखों के विषय में, "पण्डित मोहनलाल जी विष्णलाल जी पण्डचा को भेंट करी हुई" लेख कुछ सन्देह प्रकट करता है कि कहीं पण्डचा जी ने इन्हें दबाने के लिए ही ये शब्द नहीं लिख दिए ? सेवकलाल कृष्णदास ने राथ ह्विटनी द्वारा प्रकाशित अथर्ववेद की प्रतिलिपि सन् १८८४ में लीथो प्रेस में छपवाई थी।

† यह टिप्पणी पूर्व पृष्ठ पर देखें।

सं०	नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के अनुसार	वृत्तान्त
२६		पड्विंशब्राह्मण १ छपी	१		
२७		कौषीतकी ब्राह्मण १ छपी	१		
२८		गोपथ ब्राह्मण १ छपी	१		
२९	वेष्टन ६ वेदाङ्ग-पुस्तकानि	—वेदाङ्ग की पुस्तक १ **प्राचीन लिखित** सं० १९६२ जिस में शिक्षादि	१		
३०		अष्टाध्यायी की पुस्तक १ **लिखित** सं १६६२	१		
३१		निरुक्त पुस्तक १ प्राचीन लिखित सं १६६२	१		
३२		तथा एक तथा सं० १ ९९	१		
३३		तथा तथा १ सभाष्य १ छपी कलकत्ते की अंक ६	१		
३४		निघण्टु मूल पुस्तक १ **प्राचीन लिखित** सं० १८५३	१		
३५		निघण्टु और निरुक्त की पुस्तक १ छपी	१		प्रयाग भेजे
३६		पाणिनीय शिक्षा सभाष्य १ छपी	१		
३७		अष्टाध्यायी मूल १ छपी	१		
३८		तथा तथा १ काशिका सहित छपी २	१		
३९		तथा तथा १ छपी	१		
४०		धातुपाठ मूल १ **लिखित** सं० १९२७	१		
४१		उणादिपाठ १ **लिखित**	१		
४२		तथा तथा सवृत्ति १ छपी	१		
४३		पाणिनीय लिङ्गानुशासन १ छपी	१		
४४		वार्तिकपाठ सभाष्य १ **स्वामी जी का बड़े भाष्य से छंटाया लिखी**	१		
४५		पिङ्गलसूत्र सभाष्य १ छपी	१		
४६		परिभाषेन्दुशेखर १ छपी	१		
४७		महाभाष्य कैयटविवरण सहित भाग ५ छपी	१		प्रयाग भेजो
४८		चरणव्यूह १ लिखी	१		
४९		कात्यायन प्रातिशाख्य १ छपी	१		

सं०	नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के क्षनुसार	वृत्तास्त
५०		सोपसर्ग धात्वादर्श पुस्तक १ छपी	१		
५१	वेष्टन ७ **षट्शास्त्र**–	न्यायदर्शन सभाष्य १ छपी	१		
५२	**पुस्तकानि**	वैशेषिक दर्शन १ छपी	१		
५३		वैशेषिक प्रशस्तपादभाष्य १ लिखी	१		
५४		पूर्वमीमांसा दर्शन १ छपी	१		
५५		उत्तरमीमांसा १ छपी	१		
५६		तथा तथा अंक १ छपी	१		
५७		सांख्यदर्शन १ छपी सूत्र	१		
५८		वेदान्त सभाष्य १ छपी	१		
५९		योग पातञ्जल सभाष्य १ छपी	१		
६०		वेदान्त तत्त्वसार रामानुज कृत १ लिखित	१		
६१		सर्वदर्शन संग्रह १ छपी	१		
६२		षड्दर्शन चिन्तामणिका अंक	१		
६३	वेष्टन ८ **उपनिषद्**– **पुस्तकानि**	ईशावास्यादिक उपनिषद् सभाष्य १ छपी	१		
६४		मैत्र्युपनिषद् १ छपी	१		
६५		छान्दोग्य उपनिषद् १ छपी	१		प्रयाग भेजे
६६		मन्त्रोपनिषद् पाठ मूल १ लिखित	१		
६७		तैत्तिरीय आरण्यक १ छपी	१		प्रयाग भेजे
६८	वेष्टन ९ **धर्मशास्त्र**–	मनुस्मृति भाषाटीका सहित १ छपी	१		
६९	**पुस्तकानि**	तथा मूल १ छपी	१		
७०		शुक्रनीति १ छपी[1]	१		
७१		संन्यास पद्धति १ लिखित	१		
७२		संस्कारविधि[2] गुजराती टीका सहित १ छपी	१		प्रयाग भेजे

१. क्या यह पं० जीवाराम विद्यासागर (कलकत्ता) द्वारा प्रकाशित है वा अन्य ?

२. यह संम्भवतः पं० बाला जी बिठल गांवस्कर द्वारा लिखित 'वेदोक्त संस्कार प्रकाश' की पुस्तक होगी। वेदोक्त संस्कार का ऋ० द० कृत संस्कार विधि (संशोधित सं०) के साथ गहरा संबन्ध है। परोपकारिणी सभा के सन् १८९१-९२-९३ के सम्मिलित वार्षिक वृत्तान्त में नक्शा नं० १६ के अन्तर्गत 'पुस्तकालय' शीर्षक के नीचे छपी पुस्तकों में पृष्ठ ८ पर 'वेदोक्त धर्म प्रकाश गुजराती में' निर्दिष्ट है।

सं०	नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के अनुसार	वृत्तान्त
७३		मनुस्मृति के उपयोगी श्लोकों का संग्रह १ पुस्तक १ लिखी	१		
७४		विदुर प्रजागर के उपयोगी श्लोकों का संग्रह पुस्तक १ लिखी	१		
७५		अग्निहोत्र १ लिखी			
७६	वेष्टन १० **कोश**—	अमरकोश भाषाटीका सहित १ छपी	१		प्रयाग भेजी
७७	**पुस्तकानि**	नानार्थाभिधान कोश १	१		〃 〃
७८	वेष्टन ११ **वैद्यक**–	अमृतसागर १ छपी	१		
७९	**पुस्तकानि**	वैद्यक कोश १ छपी	१		
८०		निघण्टुभाषा १ छपी नाडीतत्त्व बोधिनी १ छपी	२		
८१		ओषधियों का यादीपत्र—स्वामी जी के लिखे हुए†	१		
८२	वेष्टन १२ **कुरान**–	कुरान अरबी भाषा का १ छपी	१		प्रयाग भेजी
८३	पुस्तकानि	तथा हिन्दीभाषा में अनुवाद स्वामी जी का बनाया हुआ लिखी*	१		प्रयाग भेजी
८४	वेष्टन १३ **ईसाई**–	बाईबल जिल्द ३	१		
५	**मतकी**	भट्टमोक्षमूलर कृत अंग्रेजी में ऋग्वेदभाष्य	१		
		तथा तथा कृत व्याख्यान अंग्रेजी	१		
७	वेष्टन १४ **जैनीमत**–	जिनपूजा संग्रह १ छपी	१		
	की पुस्तकें	रत्नसार भाग १ छपी	१		
		विवेकसार १ छपी	१		
०		जैनप्रभाकर १ छपी	१		
		कल्पभाष्य १ छपी	१		
		तत्त्वविवेक १ छपी	१		

† सम्भव है ऋ० द० का लिखा हुआ ओषधियों का यह यादी-पत्र वही होगा, जो 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' में पूर्ण संख्या ८०१ (पृष्ठ ८०१-८०६) पर '३४ ओषधियों का खरड़ा' छापा है।

* इसके विषय में विशेष देखिए हमारा 'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास' पृष्ठ १९२-१९४ तथा ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या २०७ का पत्र तथा पृष्ठ २६० की टिप्पणी २।

सं०	नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसाघ	उदयपुर के संभाले के अनुसार	वृतान्त
९३		श्राद्धदिन कृत्य १, छपी पार्श्वजिनत्तर महिमन स्तोत्र १	२		
९४		प्राकृत भाषा का संस्कृत शब्दों के साथ अनुवाद		१	
		अस्तव्यस्त स्वामी जी का बनाया, लिखित पुस्तक		१	
९५		जैन फुटकर श्लोकों का संग्रह स्वामी जी कृत लिखौ		१	
९६	वेप्टन १५ पदार्थ–	रामस्नेही मत गुटका १ लिखौ	१		
९७	विद्यादि विषयक–	चन्द्रालोक काव्य १ संस्कृत छपो	१		
९८	सर्वभाषा के पुस्तक–	भोजप्रबन्ध १ छपी	१		
९९		पदार्थविद्या की पुस्तक हिन्दी १ छपी	१		
१००		भूविद्या की पुस्तक हिन्दी १ छपी	१		
१०१		प्रार्थनासमाज की प्रार्थनादि पुस्तक ३ छपी	१		
१०२		ब्राह्मसमाज की पुस्तक १ छपी		१	
१०३		दयानन्द दिग्विजयार्क अंक ३ छपी	१		
१०४		अहिंसाधर्मप्रकाश १ छपी*		१	
१०५		भाषाभास्कर १ हिन्दी छपी		१	
१०६		इतिहासतिमिरनाशक खण्ड ३ के ७ छपी		१	
१०७		नीलदेवी १ छपो		१	
१०८		कुटुम्बवत्सल १ छपी		१	
१०९		विजयनीविजयवैजयन्ती १ छपी		१	
११०		भारत जननी १ छपी		१	
१११		गोमहिमा १ छपी		१	
११२		दुःखिनी बाला १ छपी		१	
११३		स्वामी जी कृत ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका उर्दू अनुवाद†	१		
११४		वेदविरुद्धमतखण्डन		१	
११५		दयानन्द सरस्वती मुखचपेटका १ जैनियों की		१	

* यह 'वेदोक्त संस्कार प्रकाश' के लेखक पं० बाला जी बिट्ठल गावस्कर कृत मराठी में छपा ग्रन्थ है।

† इसके विषय में विशेष देखिए "ऋ० द० के ग्रन्थों का इतिहास" पृष्ठ १००, १०१। तथा म० मुंशी राम जी सं० पत्र व्यवहार पृष्ठ ३०५।

सं०	नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के अनुसार	वृत्तान्त
११६	-	थियोसोफिकल सोसाइटी के दोषों का **स्वामी जी का उत्तर***		१	
११७		अंग्रेजी में आर्य प्रश्नोत्तर १ छपी		१	
११८	वेष्टन १६ दयानन्द स्वामी सरस्वती कृत सर्व-सूचीपत्र	चारों वेदों का अकारादि क्रम से सूची ❀ १ लिखी	१		
११९		ऋग्वेद सूचीपत्र १ लिखी	१		
१२०		अथर्ववेद के मन्त्रों का सूची १ लिखी	१		
१२१		उपनिषदों की सूची १ लिखी	१		
१२२		अकारादि क्रम से चार वेद और ब्राह्मणों की सूची ९ लिखी	१		
१२३		ऐतरेय ब्राह्मण की सूची १	१		
१२४		शतपथब्राह्मण की सूची १	१		
१२५		निरुक्त सूची	३		
१२६		निरुक्त और शतपथ अमूल (१) सूची	१		
१२७		निघण्टु सूची ३	३		
१२८		धातुपाठ सूची २ अकारादि क्रम से	२		
१२९		उणादि सूची २	२		
१३०		वार्तिक सूची ३	३		
१३१		ऋग्वेद के विषयों की यादी के लिये सूची २	३	१	

* सम्भव है, यह उत्तर वही विशिष्ट विज्ञापन हो जो ऋषि दयानन्द ने "थियोसोफिस्टों की गोलमाल पोलपाल" नाम से बम्बई में छपवाया था। वह 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' में पूर्ण संख्या ५१७; पृष्ठ ५४८-५५४ पर छपा है।

❀ यह वही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिस में ऋषि दयानन्द ने वेदभाष्य का आरम्भ करने से पूर्व चारों वेदों का पूर्ण मन्थन करके सूक्त-अध्याय-मन्त्र के अनुसार चारों वेदों के विषयों का संकलन किया है। ऋषि दयानन्द द्वारा रचे गए चतुर्विध भाष्य में से यह प्रथम कोटि का अति संक्षिप्त भाष्य चारों वेदों का उपलब्ध है। श्रीमती परोपकारिणी सभा की कार्यकारिणी ने २३-३-५७ की मीटिङ्ग में इतने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का कुछ भी मूल्याङ्कन न करके इसे 'न छापने' का अविवेकपूर्ण निश्चय किया था, परन्तु मेरे तथा अन्य कई व्यक्तियों द्वारा इसे प्रकाशित करने का अन्दोलन करने पर सन् १९७१ में इसे छाप दिया। परन्तु इस का मुद्रण बहुत अशुद्ध हुआ। हमने इसे पुनः हस्तलिखित प्रति से मिलान करके इसे १९७५ में 'दयानन्दीय-लघु-ग्रन्थ-संग्रह' में प्रकाशित किया है।

सं०	नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के अनुसार	वृत्तान्त
१३२		कुरान की सूची १		१	
१३३		बाइबल की सूची १		१	
१३४		जैनियों की सूची १		१	
१३५	वेष्टन १७ **स्वामी**	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका			
१३६	**जी कृत और**	ऋग्वेदभाष्य ३ अंक १+४८+५०+५१ तक		१	
१३७	**मुद्रित पुस्तकें**	यजुर्वेदभाष्य पुस्तक ३ अंक १+४८+५०+५१ तक		१	
१३८		सत्यार्थप्रकाश पुराने छापे का			
१३९		वेदाङ्गप्रकाश व्यवहारभानु	१		
१४०		तथा सन्धिविषय	१		
१४१		तथा नामिक	१		
१४२		तथा कारकीय	१		
१४३		तथा सामासिक	१		
१४४		तथा स्त्रैणतद्धित १	१		
१४५		तथा अव्ययार्थ	१		
१४६		तथा आख्यातिक	१		
१४७		तथा सौवर	१		
१४८		तथा पारिभाषिक	१		
१४९		तथा गणपाठ	१		
१५०		सन्ध्योपासनादि[1]	१		
१५१		पञ्चमहायज्ञविधि	१		
१५२		वेदान्तिध्वान्तनिवारण	१		
१५३		आर्योद्देश्यरत्नमाला	१	१	
		गोकरुणानिधि	१	१	
		भ्रमोच्छेदन	१	१	
		अनुभ्रमोच्छेदन	१	१	
		काशी शास्त्रार्थ	१	१	
		महेशचन्द्र न्यायरत्न के किये वेदभाष्य पर दोषों का उत्तर[2]	१	१	

१. यह सं० १९३१ की छपी पंचमहायज्ञविधि है।

२. अर्थात् 'भ्रान्तिनिवारण' नामक पुस्तक।

सं०	नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के अनुसार	वृत्तान्त
१३२		कुरान की सूची १		१	
१३३		बाइबल की सूची १		१	
१३४		जैनियों की सूची १		१	
१३५	वेष्टन १७ स्वामी	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका			
१३६	जी कृत और	ऋग्वेदभाष्य ३ अंक १+४८+५०+५१ तक		१	
१३७	मुद्रित पुस्तकें	यजुर्वेदभाष्य पुस्तक ३ अंक १+४८+५०+५१ तक		१	
१३८		सत्यार्थप्रकाश पुराने छापे का			
१३९		वेदाङ्गप्रकाश व्यवहारभानु	१		
१४०		तथा सन्धिविषय	१		
१४१		तथा नामिक	१		
१४२		तथा कारकीय	१		
१४३		तथा सामासिक	१		
१४४		तथा स्त्रैणतद्धित १	१		
१४५		तथा अव्ययार्थ	१		
१४६		तथा आख्यातिक	१		
१४७		तथा सौवर	१		
१४८		तथा पारिभाषिक	१		
१४९		तथा गणपाठ	१		
१५०		सन्ध्योपासनादि[1]	१		
१५१		पञ्चमहायज्ञविधि	१		
१५२		वेदान्तिध्वान्तनिवारण	१		
१५३		आर्योद्देश्यरत्नमाला	१	१	
		गोकरुणानिधि	१	१	
		भ्रमोच्छेदन	१	१	
		अनुभ्रमोच्छेदन	१	१	
		काशी शास्त्रार्थ	१	१	
		महेशचन्द्र न्यायरत्न के किये वेदभाष्य पर दोषों का उत्तर[2]	१	१	

१. यह सं० १९३१ की छपी पंचमहायज्ञविधि है।

२. अर्थात् 'भ्रान्तिनिवारण' नामक पुस्तक।

नाम वेष्टन	पुस्तक का नाम	अजमेर के संभाले के अनुसार	उदयपुर के संभाले के अनुसार	वृतान्त
वेष्टन १८	श्री स्वामी जी कृत्त ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य का अशुद्ध लेख[1] अर्थात् संस्कृत शोधकर भाषा बनाने का	१		प्रयाग भेजा
वेष्टन १९	श्री स्वामी जी कृत ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य का शुद्ध[2] लेख भाषा सहित छापने योग्य	१		तथा
वेष्टन २० छोटा	श्री स्वामी जी कृत ऋग्वेदभाष्य भाषा सहित, इसकी शुद्ध प्रति लिखी जाकर वेष्टन संख्या १९ में रखनी चाहिये और इसी में संस्कारविधि के पत्रे हैं अर्थात् उनकी शुद्ध प्रति करके छपवानी होगी	१		तथा
वेष्टन २१	ऋग्वेद यजुर्वेद सौवर पारिभाषिक उणादि कुछेक अष्टाध्यायी की संख्या और संस्कारविधि के रद्दी कागज	१		तथा
वेष्टन २२	स्वामी जी कृत और मुद्रित विक्री पुस्तक की फैरिस्त	१		
वेष्टन २३	मूल्य सहित जुदी है जिसमें हिसाब की बही ४ और नोटबुक २			
वेष्टन २४	गोरक्षार्थ हस्ताक्षरी पत्र विना छाँटे बहुत गड़बड़[3]	१		

ह० मोहनलाल विष्णुलाल पण्डया
उपमन्त्री

) श्री स्वामी जी महाराज की पुस्तकें जो वैदिक यन्त्रालय प्रयाग में हैं जिसकी फैरिस्त[4]

...या	नाम पुस्तक	संख्या पुस्तक	संख्या	नाम पुस्तक	संख्या पुस्तक
१	महाभारत सम्पूर्ण जिल्द ४ में	१	३	सामवेद संहिता ३७ जिल्द[5] में	१
२	तथा सूची जिल्द ४ में	१	४	शतपथ ब्राह्मण लिखा	१

---

१. 'अशुद्ध लेख' का अर्थ है पाण्डुलिपि (रफ कापी)। यही अर्थ आगे ही स्पष्ट कर दिया है। ऋषि ...नन्द कृत वेद भाष्य के मुद्रण से शेष भाग के विषय में श्री मोहन लाल विष्णु लाल पाण्डया के निर्देश से ...चारी रामानन्द ने विवरण तैयार करके दिया था उसे हमने 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के तृतीय परि-...ट में पृष्ठ ६४०-६४२ पर छापा है। उस में भी 'अशुद्ध' शब्द का अभिप्राय रफ कापी से ही है।

२. 'शुद्ध' का अर्थ है—मुद्रणयोग्य प्रतिलिपि (प्रेस कापी)। यही अर्थ आगे स्पष्ट कर दिया है।

३. यदि ये पत्रे सुरक्षित रहते तो इनसे ऋ० द० के गोरक्षा संबन्धी महान् कार्यपर अद्भुत प्रकाश ...ता। परोपकारिणी सभा को पुराने कागजों के ढेर में इन्हें ढुंढवाना चाहिए।

४. यह फैरिस्त आवेदन पत्र के पृष्ठ १७-१८ तक छपी है।

५. यहां जिल्द से अभिप्राय खण्ड का है। यह ऐशियाटिक सोसाइटी बंगाल से सौ सौ पृष्ठों के खण्डों ...छपा था।

संख्या	नाम पुस्तक	संख्या पुस्तक	संख्या	नाम पुस्तक	संख्या पुस्तक
५	विक्रमोर्वशी नाटक	१	३५	गुरु तेगबहादुरसिंह का वृत्तान्त	१
६	रेखागणित भाग २	२	३६	ऐतरेय ब्राह्मण अंग्रेजी में हाग [कृत]	१
७	बीजगणित जिल्द १	१	३७	ऋग्वेदसंहिता अंग्रेजी में भाग ४	१
८	क्षेत्रमिति	१	३८	,, ,,	
९	पाटीगणित भाग ९	४	३९	सैक्रेट एन्थालोजी	१
१०	ऐतरेय ब्राह्मण	१	४०	वेदोक्तधर्मप्रकाश[3]	१
११	इङ्गलेण्डीय व्याकरण भाग २	२	४१	सर्वशास्त्र का सूचीपत्र	१
१२	भिक्षुक	१	४२	व्यामोहविद्रावण	१
१३	जातिभेद	१	४३	जागदीशी	१
१४	धातुरूपावली	१	४४	दीधिती जागदीशी की व्याख्या	१
१५	शब्दरूपावली	१	४५	विषयवाद	१
१६	गणपाठ	१	४६	मुक्तावली आदि	१
१७	वार्तिकपाठ	१	४७	न्यायपदार्थ तत्व	१
१८	परिभाषापाठ	१	४८	सुश्रुत भाग ३	३
१९	गुरुमुखी की पुस्तक	१	४९	चरकसंहिता खण्डित	१
२०	कविरहस्य	१	५०	गोभिलसूत्र	१
२१	सन्मार्गदशन	१	५१	प्रतिष्ठामयूख	१
२२	षड्दर्शनचिन्तनिका	२	५२	मेदिनीकोश	१
२३	बृहदारण्यक भाष्य	१	५३	वेदार्थयत्न अंक ७०	७०
२४	धमरक्षा	१	५४	सूचीपत्र	१
२५	मसीह इवन अल्लाह	१	५५	वेदमन्त्र सूचीपत्र	१
२६	दीनहक की इतफाल	१	५६	भाषाभा (१)	१
२७	रिसाले पादास इसलाम	१	५७	सिद्धान्त	१
२८	सत्यनिरूपण	१	५८	प्रकरणरत्नाकर भाग १ छपा	१
२९	तोफेतुल इसलाम	१	५९	प्राकृत बालभाषा व्याकरण १ छपा	१
३०	शलभसूत्र[1]	१	६०	पिण्डनिर्युक्तवृत्ति लिखी	
३१	बाइबल अंग्रेजी	१	६१	भगवतीसूत्रवृत्ति लिखी	१
३२	हैईलोज ग्रामर बड़ी	१	६२	आवश्यकनिर्युक्तिटीका छपी	१
३३	,, ,, छोटी	१	६३	संस्कृत बाइबल छपो	१
३४	मथुराप्रसाद की डिक्सनरी अंग्रेजो	१			

ह० मोहनलाल विष्णुलाल पण्डया
उपमन्त्री

१. सम्भवतः शुल्व सूत्र ? २. प्रतिलिपि करते समय नाम लिखना रह गया। यु० मी०

३. यह महाराष्ट्र के विष्णु बाबा ब्रह्मचारी कृत है। विष्णु बाबा ब्रह्मचारी ने यह ग्रन्थ पहले मराठी भाषा में प्रकाशित किया था। तत्पश्चात् उन्होंने स्वयं सन् १८६९ में इसे व्रजभाषा में लिख कर छपवाया। उपरिमुद्रित व्रजभाषा में मुद्रित ग्रन्थ है।